राष्ट्रीय सेमीनार

भारत में औद्योगिक विकास व पर्यावरण प्रदूषण

छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में

21 फरवरी 2019

संक्षेपिका

आयोजक

अर्थशास्त्र विभाग

किरोड़ीमल शास. कला एवं विज्ञान (स्वशासी) महाविद्यालय

रायगढ़ (छ.ग.)

भारत में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

डॉ. क्रेसेन्सिया टोप्पो
सहा. प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शास.एस.पी.एम महा. सीतापुर
जिला –सरगुजा छ0ग0

डॉ. सुशील कुमार टोप्पो
सहा. प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
ठाकुर शोभासिंह शास.महा. पत्थलगांव
जिला – जशपुर छ0ग0

पर्यावरण शब्द परि +आवरण के संयोग से बना है जिसका शाब्दिक आशय है चारो ओर से घिरा हुआ अर्थात् हमें चारो तरफ से घेरे हुए बाह्य आवरण ही पर्यावरण है। पर्यावरण समुची भौतिक और जैविक व्यवस्था से संबंधित है जो जैविक दशाओं एवं कार्यों को प्रभावित करती है।

निःसंदेह उच्च तकनीक के कौशल से भारत में पोषण क्षमता में अद्‌भुत वृद्धि हुई है, स्वास्थ्य सुविधा में बढ़ोत्तरी के साथ मृत्यु दर घटी है फलस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि हुई, जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति हेतु कृषि, वन, खनिज, पशु संसाधनों में दोहन के स्थान पर उच्च तकनीक के कारण शोषण प्रारंभ हुआ।

औद्योगिक क्रांति ने न केवल आर्थिक परिदृश्य को बदला है बल्कि अति उपभोगवादी संस्कृति को बढ़ावा दिया है मानवीय उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है जिसने प्रकृति की परिशुद्धता की क्षमता को अतिक्रमण किया है। नवीन प्रौद्योगिकी, यंत्रीकरण से कृषि उद्योग व्यापार एवं संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। यह सर्वविदित है मृदा का जीवधारियों के दैनिक जीवन में अहम स्थान है बावजूद मृदा के स्वभाविक स्वरूप को नष्ट करने में मानव तुला हुआ है। निजि स्वार्थगत कारणों से भूक्षरण एवं अपरदन जैसी गंभीर संकट पैदा की है फलतः मृदा की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है।

पर्यावरण स्वनियंत्रण एवं स्वपोषण पर आधारित है इसमें समस्त जैविक तथा भौतिक परिस्थितियां सम्मिलित होती हैं, मानवीय क्रियाकलापों ने प्रकृति के विभिन्न घटकों में हस्तक्षेप कर पर्यावरण को असंतुलित किया है। मानव को समझना होगा कि जीवन की निरंतरता और गुणवत्ता का एकमात्र विकल्प है – 'पर्यावरणीय गुणवत्ता''।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता :–

पर्यावरण संरक्षण एक सामूहिक जिम्मेदारी है, इसकी आवश्यकता को निम्न संदर्भों में निरूपित किया जा सकता है –

(i) पृथ्वी के अस्तित्व, उस पर जीवन की समस्त भौतिक दशाओं को चिर–स्थायी बनाना।

(ii) जैव जगत एवं वनस्पति जगत के अस्तित्व को कायम रखना।

(iii) प्राकृतिक संसाधन दीर्घकाल तक मानवोपयोगी बने रहे।

(iv) आपदाओं एवं महामारियो से मानव की रक्षा।

(v) समाज की वर्तमान तथा भावी पीढ़ी को स्वच्छ एवं समृद्ध वातावरण उपलब्ध संभव हो सके।

इतिहास गवाह है कि भारत में पर्यावरण के प्रति संवेदना बहुत समय से है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सामसामयिक नियम, कानू बने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन आयोजित होते रहे हैं। संरक्षण की चिंता भारत में ईसा पूर्व 321 से 300 के बीच हो गई थी। नियम कानून एवं चिंता से ही निदान

संभव नही होगा बल्कि इनके क्रियान्वयन के लिए बाध्यकारी व्यवस्था को सशक्त एवं प्रभावकारी बनाने
आवश्यकता है।

विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुंध दोहन एवं उपभोगवादी संस्कृति में जीवन जी
के बावजूद मानव परेशान है इसकी वजह है – पर्यावरण से टूटता सामंजस्य। आज आवश्यकता है पर्याव
के विभिन्न घटकों के साथ कुशल प्रबंधन की, एवं जन–जारूकता तथा सामूहित कार्यवाही की तभी पर्याव
संरक्षण की संकल्पना को सार्थक किया जा सकता है।

औद्योगीकरण एवं मानव जीवन

डॉ. महेश श्रीवास्तव, सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र

शास.दिग्विजय स्नातकोत्तर महावि. राजनांदगांव (छ.ग.)

विनोद कुमार कोमा, सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र

शास. कंगला मांझी महाविद्यालय डौण्डी (छ.ग.)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। इस शोधपत्र का उद्देश्य औद्यौगीकरण का मानव जीवन पर प
वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। औद्यौगीकरण किसी भी अल्पविकसित व विकासशील अर्थव्यवस्था वाले देश
विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश के रुप प्रतिस्थापित करता है और यही कारण है कि आज एक दूसरे से आगे बढ़ने
होड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन किया जा रहा है। इसमें न केवल पश्चिमी देश बल्कि भारत भी षामिल
आज वैज्ञानिक प्रगति के कारण औद्योगीकरण की प्रकिया इतनी तीव्र हो गई है कि उसे वातावरणीय सामंजस्य ब
रखने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बढ़ते औद्योगीकरण से वातावरण में प्रदूषण की मात्रा इ
बढ़ गयी है कि पर्यावरण के संतुलन का खतरा मंडराने लगा है। मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए बड़े–
जंगलों का सफाया कर रहे हैं जिससे वायु प्रदूषण को और बढ़ावा मिल रहा है। वायुमंडल में कार्बन डाइआक्साइड
मात्रा बढ़ने से न केवल पृथ्वी के तापमान में वृध्दि हो रही है बल्कि जलवायु परिर्वतन भी हो रहा है जिसका प्र
परिणाम हमें अकाल, बाढ़, चक्रवाती सुनामी जैसे कारकों के रुप में परिलक्षित हो रहे है। साथ ही मानव कवच कहे
वाले ओजोन परत भी क्षतिग्रस्त हो रहा है जो मानव समुदाय के लिए ही नही बल्कि वन्य जीव जन्तुओं के लिए
खतरे की घंटी है। निःसंदेह जो औद्योगिक विकास हुए हैं या जो औद्योगिक प्रगति मनुष्य ने विगत वर्षों में की है उसे
तो रोका जा सकता है और न ही रोकने की आवश्यकता है, क्योंकि औद्यौगीकरण मनुष्य की आवश्यकता है। आवश्य
इस बात की है कि हम अपनी औद्योगिक प्रगति एवं
औद्यौगीकरण के बीच

हर घर रोशन
हर चेहरे पर मुस्कान

एनटीपीसी की सर्वश्रेष्ठ कार्यसंस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन का आधार है। एनटीपीसी न केवल भारत का सबसे बड़ा विद्युत उत्पादक है, अपितु यह राष्ट्र के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है। एनटीपीसी प्रदूषण मुक्त पर्यावरण एवं रोग मुक्त तथा सुरक्षित कार्यस्थल के प्रति सतत प्रयासरत है। हमारा लक्ष्य भारत का नव-निर्माण है। हमारा लक्ष्य मात्र विद्युत उत्पादन ही नहीं अपितु लोगों के जीवन सकारात्मक बदलाव लाना है।

एनटीपीसी
NTPC

एनटीपीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
लारा सुपर थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट
रायगढ़, छत्तीसगढ़-496440

विद्युत क्षेत्र में अग्रणी